मूल्य रु। ५-००

सलंग अंक ८८ अगस्त-२०१४

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

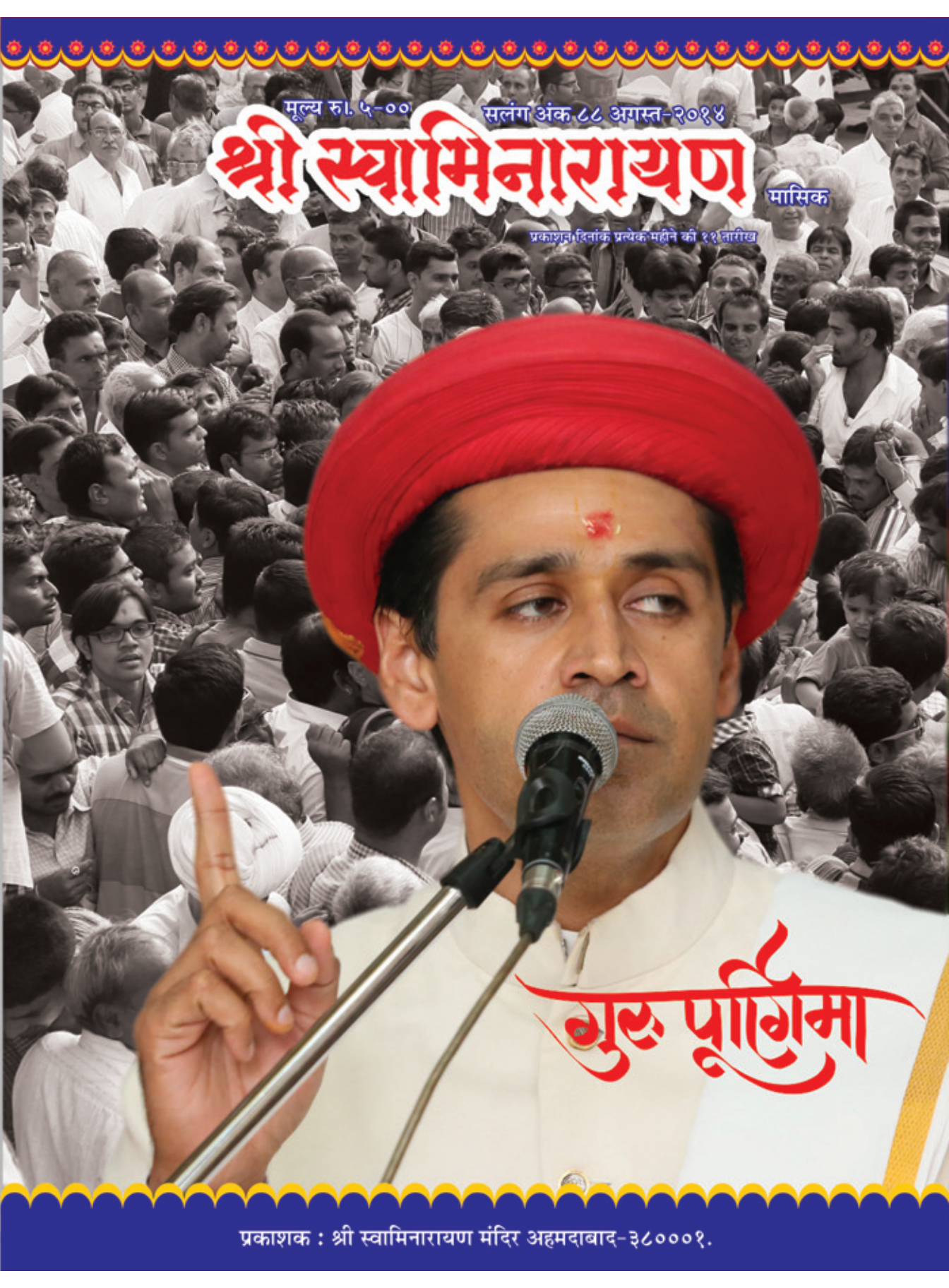

गुरु पूर्णिमा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

गुरु पूर्णिमा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ८ ● अंक : ८८
अगस्त-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	संत के लक्षण साधु में	०६
०४.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	०८
०५.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	०९
०६.	NNDYM Camp 2014 (BYRON - GA)	१०
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०८.	सत्संग बालवाटिका	२१
०९.	भक्ति सुधा	२३
१०.	सत्संग समाचार	२५

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

जिन्हे भगवान की मूर्ति का ध्यान करना हो वह भगवान के स्वरुप को तत्व के साथ समझे या तत्वरहित समझे ।'' इस प्रश्न के उत्तर में श्रीजी महाराज ने कहा कि ''भगवान ना स्वरुपने जे तत्वे सहित समझे छे ते पण पापी छे, अने जे तत्वे रहित समझे छे ते पण पापी छे। भगवान ना स्वरुपमां तो भगवान ना भक्त होय तेने तत्व छे के नथी एवुं चूंतणुं करवुं गमे ज नहि। भक्त होय ते तो एम जाणे जे ''भगवान ते भगवान, एने विषे भागत्याग कर्यानो माग नथी, ए भगवान तो अनंत ब्रह्मांडना आत्मा छे ।'' अने जेने भगवानना स्वरुपमां कोई रीतनुं उत्थान नथी तेने निर्विकल्प स्थितिवालो जाणवो। अने जेने एक मति होय तेने स्थित प्रज्ञ जाणवो। अने ते पुरुषने भगवान ने विषे एवी दृढ मति छे तेने भगवान सर्व पाप थकी मुकावे छे।

इस लिये हमें तो सर्वोपरि श्रीहरि मिले हैं, वे अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति तथा सर्व अवतार के अवतारी है, सभी के कर्ता, हर्ता भी वे ही हैं । यह भाव, यह समझ-मन में उतार लेनी चाहिये, तभी अपना कल्याण, मोक्ष संभव है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી કે કાર્યક્રમ કી રુપરેખા (જુલાઈ-૨૦૧૪)

૧૨ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર में गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर संत - हरिभक्तों द्वारा गुरुपूजन महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

૧૩-૧૪ वाली (राजस्थान) देश के गांवों में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

૨૧ प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के १७ वें प्रागट्योत्सव को अपनी शुभ उपस्थिति में संत-हरिभक्तोंने धूमधाम से मनाया।

૨૫ नड़ियाद गाँव में कच्छ के प.भ. विठ्ठलभाई के यहाँ पदार्पण।

૨૭ श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

૩૧ से ૨૦ अगस्त-२०१४ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.) दशाब्दी पाटोत्सव, अमेरिका श्री स्वामिनारायण मंदिर डिट्रोईट दशाब्दी पाटोत्सव तथा अमेरिका में लुइविल कंटकी श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

પ્રકાશન માટે સત્સંગ સમાચાર અને ફોટોગ્રાફ મોકલતા સંત-હરિભક્તોને સૂચન

શ્રી સ્વામિનારાયણ માસિકમાં પ્રકાશન માટે જે કોઈ સંત કે હરિભક્ત તેમણે સત્સંગ સમાચાર, ફોટોગ્રાફ સંપૂર્ણ વિગત સાથે શ્રી સ્વામિનારાયણ માસિકના ઈ-મેઈલ એડ્રેશ પર જ મોકલવા. ફોટોગ્રાફમાં જે તે પ્રસંગ સ્થળનું નામ અવશ્ય લખવું. દર માસની ૨૦ તારીખ સુધી આવેલા સમાચાર અને ફોટોગ્રાફ જે તે અંકમાં પ્રકાશિત થશે. તેની ખાસ નોંધ લેવી. સમાચાર ખૂબજ ટૂંકા અને મુદ્દાસર સારા અક્ષરથી લખીને મોકલવા.

- સંપાદકશ્રી

संतना लक्षण साधुनां

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

श्रीजी महाराज ने वचनामृत वडताल १० तथा गढडा अन्त्य के ७७ में साधु के ३० प्रकार के लक्षण बताया है तथा गढडा अन्त्य के ३५ में ६ लक्षण बताये हैं। श्रीमद् भागवतादि पुराणों में ३० लक्षण का वर्णन किया गया है। परंतु श्रीजी महाराज ने ६ प्रकार के अधिक लक्षण का निरुपण किया है, इस तरह वनचामृत में ३६ लक्षण संतो के बताये हैं। इतने लक्षण जिन संतो में होते हैं, उनमें भगवान अखंड बिराजमान रहते हैं । ऐसे संतो का भगवान के साथ साक्षात् सम्बन्धसमझना चाहिये। ऐसे साधु का कोई अहित करे तो भगवान का द्रोह कहा जायेगा। इसके अलांवा ऐसे साधु की सेवा करने से भगवान की सेवा का फल मिलता है। ऐसे साधु की पहचान जिस जीव को होती है वह भगवान भक्त कहा जाता है। उसके मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं।

(१) दयालु : प्रत्येक प्राणी के ऊपर दया करने वाला दूसरे के दु:ख को देखकर के दु:खी होने वाला, स्वयं बंधन रहित होकर दूसरे पर दया करने वाला।

(२) क्षमाशील : महा अपराधी जीव के ऊपर भी क्षमा करनेवाला तथा अपकार के बदले में उपकार करने वाला, गाली देने वाले पर तथा ताडन करने वाले पर क्षमाका भाव रखकर हित करने वाला।

(३) तितिक्षा : देहादिक के सुख-दु:ख को सहन करने वाला।

(४) अनुसूया : दूसरे के गुणों में दोष नहीं देखने वाला।

(५) अनीर्ष्या : दूसरों के उत्कर्ष को सहन करके उनके ऊपर ईर्ष्या न करने वाला।

(६) निर्वैर : शत्रु-मित्र, अपना-पराया के ऊपर समान भाव रखने वाला।

(७) निर्मानी : विद्यादिक गुण के अभिमान से रहित तथा स्वयं स्वार्थ रहित, अपमान का सहन करने वाला।

(८) निर्मत्सर : सभी के समुत्कर्षको सहन करने वाला, किसी भी स्थिति में प्रसन्न रहने वाला।

(९) मानद : स्वार्थ विना सभी को मान देनेवाला।

(१०) निर्दम्भ : जैसी वाणी वैसा ही वर्तन, दंभ द्वारा दूसरों को नहीं ढगने वाला। अपने गुणों को प्रगट नहीं करने वाला, स्वार्थ के लिये गुणों का देखाव नहीं करने वाला।

(११) शुचि : बाहर-अन्दर शुद्ध (शौच) वाला अर्थात् - देह तथा मन को शुद्ध रखनेवाला।

(१२) दान्त : पांच ज्ञानेन्द्रियों को वश में रखकर कर्मेन्द्रियों को भी वश में रखनेवाला।

(१३) ऋजु : मन, वाणी तथा शरीर से एक स्थिति में रहने वाला, मन में तथा बोलने में एक विचार वाला।

(१४) जीतेन्द्रिय : पांचज्ञानेन्द्रियों को वश में रखनेवाला।

(१५) निर्द्वन्द्व : ठन्ढी-गर्मी, सुख-दु:ख, मान-अपमान, शत्रु-मित्र हर्ष-शोक मे समान स्थिति में रहकर आपत्तिकाल में धैर्य रखनेवाला।

(१६) उदार : स्वार्थ विना पात्र कुपात्र विना देखे जीवात्मा के कल्याणार्थ उपदेश देनेवाला।

(१७) आस्तिक : आत्मा-परमात्मा की प्राप्ति के साधनों में दृढ विश्वासवाला तथा श्रुति स्मृति के वचनों में दृढ विश्वास तथा श्रद्धावाला।

(१८) दृढव्रतवाला : भगवान की यथार्थ आज्ञा का पालन करनेवाला, दृढवातवाला, अपने धर्म में स्थिरमतिवाला।

(१९) क्षमावान : प्रत्येक के तिरस्कार मुक्त वचन प्रत्यक्ष या परोक्ष सुनने के बाद भी प्रसन्न मुख से मौन होकर सहन करने वाला।

(२०) निद्राजित : साढेचार घन्टे से अधिक निद्रा (शयन) नहीं करनेवाला।

(२१) आहारजित : धातुपात्र के विना काष्ठादिक में सभी भोज्य पदार्थ एकत्रित करके पानी मिलकार एकवार आहार लेने वाला।

(२२) आसन जित : योगोपकरण से परिपूर्ण आसन जीतने वाला, एकाशन पर अधिक समय तक बैठने वाला।

(२३) तप : कृच्छ चान्द्रायणादिक व्रत - उपवास करके पंच विषयों से वृत्तियों को वापस खींचने वाला।

(२४) सत्य : प्रिय तथा नम्रतापूर्वक अहिंसक सत्य वचन बोलने वाला।

(२५) संतोष : मायिक पदार्थो से रहित होकर - जितना मिले उतने में संतोष (तृप्ति) करने वाला।

(२६) श्रुत : सभी शास्त्रों का यथार्थ ज्ञानवाला तथा सर्वशास्त्रों का अभ्यास करने वाला, शास्त्र व्यसनी तथा ग्राम्यवार्ता से दूर रहने वाला।

(२७) षड्रिपुजित : काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, स्वाद, इन ६ शत्रुओं को जीतकरके उनसे पराभव प्राप्त नहीं होने वाला।

(२८) व्यसन रहित : किसी भी प्रकार के मादक द्रव्यों का त्याग करने वाला।

(२९) हिंसारहित : मन-कर्म-वचन से किसी भी प्राणी का द्रोह नहीं करनेवाला।

(३०) क्रिया : भगवान की कथा-कीर्तन-नामस्मरण ध्यान-धारणा इत्यादि भगवान से सम्बन्धित क्रिया के विना व्यर्थ समय नहीं बिताने वाला।

इस तरह श्रीमद् भागवत पुराण के एकादश स्कंधमें ३० लक्षणो वाला जो हो उसे संत समझना चाहिये। गढडा अन्त्य के ३५ वें में शुकमुनि के प्रश्न के उत्तर में श्रीजी महाराजने कहा कि जिस साधु के हृदय में भगवान का निवास हो उस साधु के लक्षण इस तरह हैं - (१) भगवान को साकार समझे, चाहे जिसतरह के निराकार के शास्त्रों का श्रवण किया हो तो भी भगवान को सदा साकार समझे, अनेक ब्रह्मांड की उत्पत्ति - स्थिति लय करने वाले, सदा अक्षरधाम में विराजमान रहेने वाले वही प्रत्यक्ष महाराज हैं इस प्रकार की समझ कभी डिगे नहीं। (२) भगवान की एकांतिक भक्ति स्वयं करे तथा दूसरा कोई करे तो उसे देखकरके प्रसन्न रहने वाला। (३) भगवान के भक्त में कोई स्वभाव अडचन रुप हो तो अडचन छोडकर भक्त के संग का त्याग करे, अपने स्वभाव का त्याग करके साधु का अभाव अपने मन में न आने दे। अपने स्वभाव के अवगुण का स्मरण करता रहे लेकिन भक्त से दूर जाने को कभी नहीं सोचे। (४) अच्छे वस्त्र, भोजन, तिल, पदार्थ जो भी मिले उसे भगवान के भक्त को देकर प्रसन्न रहे। (५) दंभ विना का होकर समान स्थिति में रहे। (६) शांत स्वभाव वाले कुसंगी की संगत विना चाहे करनी पडे तो भी उसके स्वभाव को अपने में नही आने दे, उसके प्रति अरुचि का भाव सदा रखना।

इस तरह के ६ लक्षण वाले जो साधु हों उनके हृदय में सदा साक्षात् भगवान बिराजमान रहते हैं। ग.प्र. ७७ के वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि "जेने भगवानना स्वरुपनो निश्चय होय तेमां एकादश स्कन्धमां कह्यां एवां जे साधुना त्रीस लक्षण ते आवे छे। माटे जेमां त्रीश लक्षण संतना न होय तेने पुरो साधु न जाणवो अने ज्यारे प्रभुना गुण अंतमां आवे त्यारे ते साधु त्रीस लक्षणे युक्त होय।"

श्रीजी महाराजने यहाँ पर संत तथा साधु की व्याख्या अलग की है। जिस में ३० लक्षण संतो के न हो उसे पूर्ण साधु नहीं समझना। अर्थात् साधु में संत के लक्षण होना चाहिये। साथु आश्रम हैं। संत का कोई आश्रम नहीं होता। जिस में ३० लक्षण हों उसे संत कहते हैं। चाहे वह जिस आश्रम में रहता हो। साधु के पोषाक से पहचाना जाता है और संत को गुण से पहचाना जाता है।

जेतलपुरधाम-पूनम को वाहन लेकर आने वाले हरिभक्तों को सूचना

जेतलपुर निवासी परमकृपालु श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शनार्थ वाहन लेकर आने वाले हरिभक्तों को सूचना है कि अपने वाहन टु व्हीलर, ४ व्हीलर अथवा कोई वाहन जेतलपुर मंदिर के आगे रास्ते में या यत्र-तत्र पार्क नहीं करेंगे। जहाँ तहाँ पार्क करने से दर्शन के लिये आने वाले प्रत्येक हरिभक्तो को तथा जेतलपुर गाँव के लोगों को आने जाने में तकलीफ होती है। इसलिये अपने वाहन को जेतलपुर मंदिर की मालिकी के कोशलेन्द्रबाग में ही पार्क करें। इसकी जानकारी सभीको होनी आवश्यक है। -महंत स्वामी - जेतलपुर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा का नया फोन नम्बर ०७४१७५४३०९८

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिमंतनगर (साबरकांठा) में महंत के रुप में शा. स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी गुरु स्वा. हरिप्रसाददासजी (वालीवाला) की नियुक्ति की गयी है।

प्रसादीना पत्रोनुं आयमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र : लिखावितं पांडे श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज जत स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी आदि अधिकारी समस्तनाराणाय वांचसो । बीजुं लखवा कारण एम छे जे स्वामीश्री सहजानंदजी महाराजनी आपणने एम आज्ञा छे जे आपणे कोईनुं करज न करवुं तथा थापण न राखवी तथा पोताना सेवक सत्संगी बाई भाई होय तेमने व्याजे रुपैया न देवा अने मुहोवत ने पेटे जो देवा पडे तो उछीना करीने देवा पण पाछी तेनी पासे उघराणी न करवी ने पोताने भाणे आपे तोज लेवा ने कुसंगीने व्याजे रुपैया देवा होय तो तेनुं घरेणुं राखीने देवा अने सत्संगीने तो घरेणुं राखी ने पण न देवा अने बीजु जे परत्यानी रीत ते तो शिक्षापत्री मां महाराजे लखी छे ते प्रमाणे वरतवुं ।

अने आ लख्या प्रमाणे श्रीजी महाराजनी आज्ञाजे नहीं माने ते अमारो सेवक नहीं ने ते बचन द्रोही ने गुरु द्रोही छे ॥

॥ संवत १८८५ - पौष शुक्ल-१२ ॥

विवरण : इस जीव के कल्याण में सबसे बड़ा विघ्न धन का लोभ है । इसी कारण दूसरे अन्य दुर्गण भी आते है । जीवन का अधिक समय धन संग्रह करने में तथा लेन देन करने में विता देते हैं । तुच्छ धन की प्राप्ति के लिये प्रभु के भजन का अत्यन्त कीमती समय गवाँ देते है । श्रीहरिने धर्मवंशी आचार्य को समस्त सत्संगी के गुरुपद पर प्रतिष्ठित किया है । मंत्रदीक्षा देकर जीव के कल्याण करने का - सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भी उन्हीं का है । आश्रित सेवक किसी भी प्रकार से दुःखी न हों इसके लिये श्रीनरनारायणदेव देश के आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने उपरोक्त पत्र को लिखवाया है ।

श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में ऐसी आज्ञा की है कि इन्कम से अधिक खर्च नहीं करना चाहिये । अन्यथा बड़े दुःख का सामना करना पडेगा । इसलिये सभी भक्त सावधान होकर आत्यन्तिक कल्याण के लिये नीतिपूर्वक धर्म का आचरण करें । जो पुरुषार्थ से धन प्राप्त हो उसमें से दशांश-विशांश भाग देव को अर्पण करे । अवशिष्ट भाग को जीवनमें खर्च के लिये रखे । इससे जीवन में सुख और शांति की प्राप्ति होगी ।

आज का जमाना बड़ा व्यस्त है उस में एक ही कारण है कि स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर, राजा-प्रजा सभी धन के पीछे दौड रहे हैं । इस जीव को धन के पीछे इतना लोभ हो गया है कि उसे अपने शरीर की भी परवाह नहीं है । शरीर में रोग होने पर भी मंदिर भले नजाय लेकिन धन कमाने तो अवश्य जाना है । लेकिन श्रीहरि तो सभी को उतना ही देते है जितनी उसे आश्यकता है । इसके अलांवा वह चाहे जितना भी पुरुषप्रयत्न करे उसे प्रभु देते नहीं है । नारायणजी का जो भजन करेगा उसके पास लक्ष्मीजी अवश्य आयेगी । गृहस्थ तथा त्यागी अपने कर्तव्य से विमुख न हो, सभी अपने कर्तव्य से विमुख न हो, सभी अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक रहैं ।

इसके अलांवा आचार्यश्री यह भी लिखवाते है कि किसी की धरोहर अपने पास निक्षेप के रुप में न रखें क्योंकि उसे वापस तो करना ही है, वह अपनी सम्पति नही है । अपने सत्संगीको व्याज पर रुपये नहीं देना चाहिये । व्याज लेना निषेधहै । जो सेवक सेवा करता हो उसकी रुपयों से मदद अवश्य करनी चाहिये । लेकिन उस से व्याज नही लेना अपने सत्संगी को विना व्याज के रुपये दे लेकिन मांगे नही, जब वह दे तभी लेना । शिक्षापत्री के अनुसार पृथ्वी धन का व्यवहार लिखित में करना चाहिये । कुसंगी को रुपये देने पडे तो उससे कुछ मिल्कत थापण के रुप में लिखवाकर लें जिससे रुपये वापस लेते समय समस्या न रहे । आज के युग में आचार्य महाराजश्री इस नियम का उपयोग तो बैंकों से घर-कार इत्यादि के खरीदने में कर लेते हैं ।

सत्संगियो के लिये यह नियम विशेष रुप से बताया गया है - पहले व्याज नही लेना, दूसरे मिल्कत गिरवी नही रखवाना, तीसरे रुपये को वापस मांग नही करना । इन तीन शर्तो के अधीनस्थ होकर लेन-देन करनी चाहिये ।

इसका अर्थ यह नहीं कि अपने सत्संगी को रुपये नहीं देना, अवश्य देना चाहिये लेकिन महाराज की आज्ञा में रहकर लेन-देन करने से महाराज की प्रसन्नता मिलेगी, आत्म शांति मिलेगी, भाईचारे का नाता पुष्ट होगा। एक दूसरे में अवगुण नहीं आयेगा, एक दूसरे को समझने का अवसर मिलेगा। महाराज की आज्ञा का सदा चिन्तन करते हुये जीवन में वर्तन करना चाहिये।

अधोनिर्दिष्ट नियमों का पालन करते हुये जीवन व्यतीत करना चाहिये।

(१) अपने कर्तव्य से कभी विमुख नहीं होना चाहिये।

(२) सेवक - सत्संगी को रुपये देकर उनसे कभी व्याज नहीं लेना चाहिये।

(३) सत्संगी-सेवक को रुपये देते समय वापस प्राप्त करने की भावना नहीं रखनी चाहिये।

(४) देने के बाद पुनः मांगने की वात नहीं करनी चाहिये। स्वयं हरि की इच्छा से आजाय तो ले लेना।

(५) सत्संगी को रुपये देते समय मिल्कत गिरवी नहीं लिखवाना।

(६) कुसंगी की मिलकत गिरवी लिखवाकर रुपये देना।

(७) शिक्षापत्री श्लोक १४१, १४३, १४४, १४५, १४६ इत्यादि में जो उल्लेख है उसी तरह आज्ञा का पालन करना चाहिये।

इस तरह करने से सत्संग में आत्मबुद्धि बढेगी, व्यावहारिकता बढेगी, सभी सुखी होंगे और सुख पूर्वक भगवान की भजन करेंगे। आचार्य महाराजश्री अपने सेवक के दुःख को देखकर दुःखी होते है। जो इस तरह का वर्तन नहीं करेगा वह हमारा सेवक नहीं कहा जायेगा। हम कौन सा कर्तव्य करें कि यह लोक तथा परलोक बिगडे नहीं इसका सदा चिन्तन करते रहना चाहिये।

करीब १८० वर्ष पूर्व यह पत्र अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के गादीपति आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ने लिखवाया था। यह पत्र अभी श्री स्वामिनारायण म्युजियम होल नं ..... में हरिभक्तों के दर्शनार्थ रखा गया है। उस पत्र का दर्शन करके सभी भक्त प्रसन्न रहें।

टोरडा मंदिर में अषाढी का माप तोल

- महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडाधाम)

स.गु.मू.अ.मू. गोपालानंद स्वामी के चमत्कार आज भी दिखाई देते हैं। इसका एक उदाहरण ''अषाढी तोल'' है। टोरडा मंदिर में अषाढी पूर्णिमा की रात्रि में गाँव के हरिभक्त टोरडा मंदिर में एकत्रित होते हैं। बाद में सभी हरिभक्त अनाज, रसकस, तेलेबिया, लाल माटी (मनुष्यों के लिये) काली माटी (पशुओं के लिये) इत्यादि को आधा-आधा तोला सोने के कांटे पर तोला जाता है। इसके बाद उस वस्तु को भगवान के शरीर में ११ पोटली से बांधा जाता है। बाद में उसे घड़ा में रखकर उस घडे को ढंक दिया जाता है। उस तोल के कांटे को उस घड़े के ऊपर रख दिया जाता है। इस घड़े को रात्रि में गोपाललालजी के मंदिर में सिंहासन के पास रख दिया जाता है। दूसरे दिन प्रातःकाल अर्थात् अषाढ कृष्ण प्रतिपदा को गाँव के हरिभक्त मंदिर में आते हैं। आधे घंटे तक भजन-धुन की जाती है। इसकेबाद घड़े को मंदिर के घुम्मट के नीचे रखा जाता है। घड़े के मुख को खोलकर अन्दर से सभी पोटली बाहर निकाली जाती है। पुनः उनपदार्थों को तोलाजाता है जो वस्तु तोलने के समय बढी रहती है उस का पाक अधिक होगा। जो वस्तु तोलने के समय कम होगी उसमें घट बढ नहीं होती। इस तरह प्रति वर्ष अषाढी तोल का कार्य किया जाता है। व्यापारी तथा किसान भी इसकी जानकारी के लिये आते हैं। इस परिणाम के आधार पर सभी खेती तथा व्यापार करते हैं। यह चमत्कार प्रति वर्ष देखने को मिलता है।

आषाढी तोल के इस वर्ष की रुपरेखा

१.	लालमाटी	:	बाजरी के छ कण अधिक
२.	कपास	:	बराबर
३.	कालीमाटी	:	बाजरी के २ कण कम
४.	मकाई	:	बाजरी के ६ कण अधिक
५.	रसकस	:	बाजरी के ३ कण कम
६.	चना	:	बाजरी के ६ कण कम
७.	धान	:	बराबर
८.	मूग	:	बाजरी के भी ५ कण अधिक
९.	बाजरी	:	बाजरी के ११ कण अधिक
१०.	गेहूँ	:	बाजरी के तीन कण कम
११.	उडद	:	बाजरी के ७ कण अधिक

NNDYM Camp 2014 (BYRON - GA)

श्री नरनारायण युवक मंडल केम्प २०१४ बायरन (शा. स्वा. रामकृष्णदासजी - कोटेश्वर)

जिस देश या समाज का युवान उज्ज्वल है उस देश तथा समाज का भविष्य उज्ज्वल है 'इस युक्ति को चरितार्थ करने के लिये देश तथा सत्संग के युवानों का भविष्य तथा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व्यवस्था उज्ज्वल बने इस हेतु से आज से लगभग २५ वर्ष पूर्व प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रेरणा से विद्यमान आचार्य महाराजश्रीने (उस समय लालजी महाराजश्री) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना की थी - जिससे हजारों युवानों को सच्चा मार्ग मिला था । उस प्रवाह में हजारो युवान देश तथा विदेश से जुडे । विशेषरुप से विदेश में जन्म लेने वाले विदेशी संस्कृति में रहकर भी वे अपने संस्कारों में आप्लावित रहें इस हेतु से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का यह भगीरथ प्रयास सफल रहा । उन का संकल्प था कि युवकों को एकत्रित करके घर से दूर केम्प (सत्संग शिबिर) करना । २० वर्ष से यह केम्प की परम्परा अविरत चल रही है । १५ वर्ष तक प.पू. आचार्य महाराजश्रीने इस केम्प द्वारा अनेक युवानों को श्री नरनारायणदेव की सच्ची पहचान कराई थी । देव-आचार्य, संत-शास्त्र तथा भक्तों के परिवार को पुष्ट किया । वही परंपरा विगत ५ वर्ष से प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री अग्रसारित किये हुये हैं । उसी संदर्भ में वर्ष २०१४ का न.ना.यु. मंडल का केम्प (सत्संग शिबिर) बायरन ज्योर्जिया में आयोजित किया गया था ।

ता. ६-७-१४ से १२-७-१४ तक आयोजित इस केम्प का मुख्य सूत्र था - **1 God, 1 Vision, 1 Leader** (एक भगवान, एक ध्येय, एक आचार्य) अमेरिका तथा इंग्लेड से ६०० बालक-बालिकायें इस में भाग ली थी । प्रतिदिन प्रातः जागकर स्नान पूजा के बाद दिन का कार्यारंभ होता था । प्रतिदिन प्रातः सायं २-२ घंटे तक ज्ञान सत्र आयोजित होता था । जिस में प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में विद्वान संतो तथा भक्तों द्वारा बालको को सच्चा ज्ञान प्राप्त कराया गया था । सत्र के समापन में पू. लालजी महाराजश्री स्वयं बालकों के प्रश्न का उत्तर करते थे । प्रत्येक रात्रि के समय स्पर्धा का आयोजन करके प्रभु के स्मरण के साथ विश्रांति होती थी । ज्ञान-भक्ति-आनंद के साथ दिन कैसे बीत जाता था पता ही नहीं चलता था । धर्म के साथ जीवन में विकास कैसे हो इस पर भी ज्ञान दिया जाता था । विविधखेल के साथ ज्ञान भी देने की प्रक्रिया की जाती थी ।

पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में गुरुपूर्णिमा तथा रंगोत्सव जैसे उत्सव भी मनाये गये थे । जिसका लाभ लेकर बालक धन्यता का अनुभव करते थे । केम्प के समापन के अवसर पर बालकों की आंखो में ज्ञान-भक्ति तथा नये मित्र प्राप्त करने का आनंद तो था ही साथ में अलग होने का उतना दुःख भी हो रहा था । पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को श्रीनरनारायणदेव की निष्ठा हृदय में रखकर पुनः आगामी वर्ष के लिये कलिवलेन्ड (ओहाया) में मिलने का आशीर्वाद देकर विदा किया ।

यह केम्प बहनों के लिये भी विशिष्ट था । इस का कारण यह था कि प.पू. गादीवालाश्री, पू. श्रीराजा, पू. बिन्दु राजा तथा श्री सौम्यकुमार एवं श्री सुव्रतकुमार का सानिध्य प्राप्त हुआ था । पू. गादीवालाजीने सभी बहनों को ज्ञान-भक्ति का खूब उपदेश दिया । सभी से एक सूत्र में बंधकर सत्संग करने की आज्ञा की ।

NNDYM में इतिहास में प्रथमवार ६०० जितने बालकों का विशेष समुदाय एकत्रित हुआ था । इन बालकों के रहने-खाने-पीने की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन ने की थी । इतनी संख्या के बालकों के भौजनादिक की व्यवस्था बारयन मंदिर के हरिभक्तों ने की थी । पू. लालजी महाराजश्रीने बायरन मंदिर के सभी स्वयं सेवकों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस केम्प के बालकों को ज्ञानप्राप्त हो इस हेतु से संतो में स.गु. स्वा. निर्गुणदासजी, शा. स्वा. रामकृष्णदासजी, शा. स्वा. अभयप्रकाशदासजी, शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी, स्वा. जयवल्लभदासजी तथा स्वा. ब्रह्मस्वरुपदासजी भी सहयोगी बने थे ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

पांडे रघुवीरजी इच्छारामजी जोग ली पांडे अयोध्याप्रसादजी रामप्रतापजी जत तमारे तथा अमारे मंदिरो विगेरे देश विभाग करी मोरना रुपैआ तथा दाना तथा घोडां डोर वगेरे जे कांई हतु तथा देश विभाग कराय छे जे कांई लेण देण हती ते सरवे अमे भरायु छे ए आज दिन सुधी अमारे तथा तमारे कोई बातनो लांझो टंटो नथी परशपर अमारां मन राया के संवत १८८५ ना पोष सुद-७ दशकत लाधा रामजी उभे रजु शमझण करी लखुं छे।

अत्र मतु

पंडे अयोध्याप्रसाद मतो ब्रह्मानंद स्वामी नी साख्य

अरलिख्युं त सहि

श्रीहरि के प्रसादी का यह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ९ में सभी के दर्शनार्थ रखा गया है। सभी हरिभक्त दर्शन का लाभ अवश्य लें। इस हस्ताक्षर का दर्शन बड़े पुण्यवाले जीव को ही संभव है। आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री तथा स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी के हस्ताक्षर हैं।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियममे गणेश चतुर्थी के उत्सव

श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री पंचदेवों के पूजन की आज्ञा की है और श्री स्वामिनारायण म्युजियम में स्वयं श्रीहरिने जिस गणपतिजी की मूर्ति की पूजा की थी वही मूर्ति होल नं. १ में प्रस्थापित है, इस लिये प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री गणपतिजी का पूजन गणेश चतुर्थी भाद्रपद शुक्ल चौथ ता. १९-८-१४ को प्रातः ८-०० बजे से ११ बजे तक आयोजित किया गया है। गणपति पूजन में सभी हरिभक्त को लाभ मिले इस हेतु से पति-पत्नी दोनो के बैठने की व्यवस्था की गयी है। जिन हरिभक्तों को इसका महालाभ लेने की चाहना हो वे ११००/- (एक हजार एक सौ) रुपये श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भरकर रसीद प्राप्त करलें। इसकी विशेष जानकारी अधोनिर्दिष्ट फोन से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जुलाई-२०१४

१,००,०००/-	अमीन रघुवीर एन. अमदावाद
५१,०००/-	नाथालाल करशनभाई हालाई, घनबहन नाथालाल हालाई तथा कान्तीभाई, डॉ. कपिलभाई सह परिवार
३१,०००/-	अमृतभाई सेंधाभाई पटेल (कुंडालवाला-अमदावाद)
२५,०००/-	श्री स्वामिनारायण एकेडमी, निकोल, अमदावाद
११,०००/-	प.पू. बड़ी बहनजी, अमदावाद
११,०००/-	मयूरभाई ठाकरशीभाई चावडा - बलोल-अमदावाद
१०,०००/-	निलेशभाई वी. शाह(होंगकोंग वाला - वर्तमान - अमदावाद)
६,०००/-	विष्णुभाई बी. पटेल - वडु
५,००१/-	अ.नि. प्रफुलचंद्र परसोत्तमदास भावसार (मेउवाला न्यु मणीनगर)
५,०००/-	शाह भगवतप्रसाद एफ. गांधीनगर
५,०००/-	सोनी जयेन्द्रभाई अमदावाद
५,०००/-	पटेल लालभाई मरघाभाई, गांधीनगर
५,०००/-	भावसार वसुधाबहन नरेशचंद्र नासिक
५,०००/-	कमलेशभाई एच. शाह (नेशनल इन्स्युरन्स) अमदावाद
५,०००/-	नितांबेन योगेशभाई परमार (श्रीहरि रीयल एस्टेट) अमदावाद
५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर (तळपद) डांगरवा दूधदहीं लीला द्विशताब्दी उत्सव निमित्ते

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जुलाई-२०१४)

ता. ५-७-१४	श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा पाटोत्सव प्रसंग पर (यु.एस.ए.) प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता के लिये।
ता. ६-७-१४	प्रातः - भानुबहन सुरेशभाई पटेल (बापूनगर-जानकी फ्लैट)
	दोपहर - डॉ. मगनभाई जी. जागाणी कृते अश्विनभाई तथा भरतभाई
	सायंकाल - रमणभाई कुरजीभाई सोडवडिया (हीरावाडी-बापुनगर)
ता. १३-७-१४	श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज, अमदावाद - प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता के लिये।
ता. १४-७-१४	विद्या बचीबहन धर्मकुल, अमदावाद, प.पू. बड़ी गादीवालाजी की प्रसन्नता से।
ता. २७-७-१४	प्रातः अ.नि. हरगोविंददास ताराचंद लखतरिया, अमदावाद कृते कमलेशभाई शाह तथा विजय शाह।
	सायंकाल - श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, साबरमती कृते सुमनभाई तथा नयनाबहन।
ता. २९-७-१४	दिलीपभाई ठक्कर, दियोदर, कृते महंत स्वामी (कालुपुर)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

પ.પૂ. ધ.ધૂ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮ કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞા તથા આશીર્વાદથી
વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા
શ્રી નરનારાયણદેવના જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ડિસેમ્બર-૨૦૧૪

મહોત્સવ સ્થળ

શ્રી નરનારાયણ નગર, તપોવન સર્કલ, મોટેરા ગામ, એસ.પી. રીંગ રોડ, અમદાવાદ.

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ. ભાવિ આચાર્યશ્રી ૧૦૮ શ્રી વજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

આયોજક

મહંત સ્વામી સ.ગુ. શા. સ્વામી શ્રી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા સ્કીમ કમિટી
તથા શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ સમિતિ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર - અમદાવાદ-૧
ફોન. ૦૭૯-૨૨૧૩૨૧૭૦, ૨૨૧૩૮૮૧૮

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ અનંત જીવોનું કલ્યાણ કરવા અનંતમુક્તોને સાથે લઈ મનુષ્યદેવ ધારણ કરી પૃથ્વીલોક પર પધાર્યા. ૪૯ વર્ષ સુધી પોતાની અપાર દયા અને દિવ્ય ઐશ્વર્ય વડે અનંતજીવોને અક્ષરધામના સુખભોગી બનાવ્યા અને એ પરંપરા અવિરત ચાલ્યા કરે એ માટે દેવ, આચાર્ય, સંત અને સત્શાસ્ત્રની કલ્યાણકારી પરંપરા પ્રવર્તાવી. શ્રીહરિએ કરેલા અનેક અલૌકિક કાર્યો પૈકીનું શિરમોર કાર્ય એટલે મંદિરોનું નિર્માણ. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની આજ્ઞાથી આજથી લગભગ ૧૯૨ વર્ષ પહેલા સ.ગુ. આનંદાનંદ સ્વામીએ ગુજરાતના મુખ્ય નગર અમદાવાદમાં વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરનું નિર્માણ કર્યું અને સર્વોપરી શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે બાથમાં લઈને સ્વસ્વરૂપ શ્રી નરનારાયદેવ પધરાવ્યા. શ્રી નરનારાયણદેવના ઉંબરા પર ઊભા રહીને "આ નરનારાયણ દેવનું સ્વરૂપ અને અમારા સ્વરૂપમાં લેશમાત્ર ફેર નથી." "જે એમ જાણે જે આ નરનારાયણદેવ અને ભગવાન સ્વામિનારાયણ જુદા છે તેણે અમને ઓળખ્યા જ નથી." "આ નરનારાયદેવની મૂર્તિ સત્સંગી માત્ર એ પૂજામાં રાખવી." આવા મહિમા વચનો સ્વમુખે કહ્યાં એવા મહાપ્રતાપી શ્રી નરનારાયણદેવનું મંદિર સમયના ઘસારે ઘસાતા જીર્ણોદ્ધારની જરૂરિયાત ઉભી થઈ. જે તે સમયે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તે સમયના મહંત સ.ગુ. પી.પી. સ્વામી (જેતલપુર)એ કાર્યનો આરંભ કર્યો. ત્યારબાદ પૂ. નિર્ગુણ સ્વામી તથા પૂ.નારાયણસ્વરૂપ સ્વામીએ કાર્યને આગળ ધપાવ્યું. પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી વર્તમાન મહંત સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ સ્કીમ કમિટિએ આ જીર્ણોદ્ધારના કાર્યને પુરજોશમાં વેગ આપ્યો જે હવે પૂર્ણતાને આરે છે. સાથો સાથ દેવોના સુવર્ણ સિંહાસન પર જીર્ણ થતા તે સ્થાને નૂતન સુવર્ણ સિંહાસન બનાવવાનો નિર્ધાર કર્યો જે પણ પૂર્ણ થશે. જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા નૂતન સિંહાસનના ઉદ્ઘાટનના પાવન પ્રસંગે પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં સૌ સંતો ભક્તોના સાથ સહકારથી ભવ્યાતિભવ્ય "શ્રી નરનારાયદેવ મહોત્સવ" તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪ પર્યંત ધામધૂમથી ઉજવવાનું નિર્ધારેલ છે. તો આવો આપણે સૌ સાથે મળી આપણું તન, મન અને ધન શ્રી નરનારાયણદેવના ચરણોમાં સમર્પિત કરી આ ઉત્સવને ઉમંગથી ઉજવીએ.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन (यु.एस.ए.) में नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित केम्प में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (२) बायरन मंदिर में रंगोत्सव के उवसर पर हरिभक्तों के साथ रंग खेलते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

(३) बायरन मंदिर में गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारते हुए संत-हरिभक्त ।

(१) श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४२ वाँ जन्मोत्सव महोत्सव के उपलक्ष में नड़ियाद कच्छ स्वामिनारायण सत्संग द्वारा प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में सभा। (२) ४२ वाँ जन्मोत्सव के प्रसंग पर महेसाणा के हरिभक्तो द्वारा पदयात्रा। (३) ४२ वाँ जन्मोत्सव के उपलक्ष में पाटण, कुजाड, नारायणनगर एवं हिंमतनगर में सत्संग सभा एवं सीतापुर में समूह महापूजा।(४) अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव केशर स्नान के यजमान प.भ. प्रकाशभाई लालभाई पटेल (उनावा) पूजन का लाभ लेते हुए।

(१) अहमदाबाद मंदिर में श्रावण महिने में कथा पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (२) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में नांदोल गाँव में सत्संग सभा में लाभ लेते हुए संत । (३) दहेगाँव श्री न.ना.देव महोत्सव प्रसंग पर अखंड धून । (४) श्री न.ना.देव उत्सव के उपलक्ष में धमीज गाँव में सत्संग सभा में संत-हरिभक्त । (५) आमजा, वागोसणा एवं सरढव गाँव में सत्संग सभा में लाभ देते हुए संत । (६) श्री न.ना.देव उत्सव के उपलक्ष में माधवगढ (तलोद) गाँव में संतो द्वारा सभा एवं बहनो द्वारा १२ घंटे की अखंड धून ।

मूली मंदिर द्वारा निर्मित श्री राधाकृष्णदेव - श्री मांडवरायजी प्रवेश द्वार का गूरु पूर्णिमा के प्रसंग पर उद्घाटन करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री एवं मूली मंदिर में गुरुपूर्णिमा प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन करते हुए हरिभक्त ।

(१) एटलान्टा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाजाश्री । (२) शिकागो मंदिर में गुरुपूर्णिमा प्रसंग पर गुरु पूजन करते हुए संत हरिभक्त । (३) वोशिंग्टन डी.सी. मंदिर में झूले का दर्शन । (४) डिट्रोईट मंदिर में रथयात्रा एवं गुरुपूर्णिमा दर्शन ।

મહોત્સવ દરમિયાનના આયોજનો

- શ્રીમદ્ સત્સંગીભૂષણ અંતર્ગત શ્રી નરનારાયણદેવ માહાત્મ્ય કથા
- એક દિવસીય શ્રી હરિયાગ (યજ્ઞ)
- ૩ દિવસ સમૂહ મહાપૂજા
- મહાઅભિષેક, છપ્પન ભોગ અન્નકૂટ
- શ્રી નરનારાયણદેવની નગર યાત્રા
- પ્રદર્શન
- શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધુન
- બ્લડ ડોનેશન કેમ્પ
- સર્વ રોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ દિવાઓ વડે કાલુપુર મંદિરની સમુહ આરતી
- શ્રી નરનારાયણદેવ બાલમંડળ તથા બાલિકામંડળ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૫૧ મીનીટની ૨૫૧ ગામડે અખંડધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦,૦૦૦, વચનામૃત - ૫૧૦૦, ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર શ્રી નરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ
  (ગામડાઓના બાળમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઈસિકલ વિતરણ

આપનો સહયોગ

આ મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં આપ આપના પરિવારજનો, મિત્રો સાથે મળી માળા, દંડવત્, પ્રદક્ષિણા, જનમંગલ-વચનામૃત-ભક્તચિંતામણીના પાઠ, મહામંત્રલેખન, પદયાત્રા જેવા નિયમો લઈ અથવા લેવડાવી વિશેષ ભજન કરશો. (જે માટે નોટબુક તથા ફોર્મ આપણા શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન અથવા તો કાલુપુર મંદિરની ઓફિસમાંથી મળશે.)

આર્થિક રીતે યોગદાન આપી સહભાગી થવા ઇચ્છતા ભક્તો મહોત્સવ દરમિયાન આયોજીત સમુહ મહાપુજા-હરિયાગ તથા અન્ય યજમાન પદનો લાભ લઈ શકશે.

૧૧,૦૦૦/- ૨૧,૦૦૦/-	તા. ૨૫-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ સમૂહ મહાપૂજાનો લાભ મળશે. (પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૩૧,૦૦૦/- ૫૧,૦૦૦/-	તા. ૨૬-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના નિવાસસ્થાને નિત્ય ધર્મકુળ દ્વારા પૂજાતા પ્રસાદીના હરિકૃષ્ણ મહારાજની મહાપૂજા(પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૧,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ સર્વાવતારી ભગવાન શ્રીહરિની પૂજામાં રહેલાં અને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજશ્રી જેની દરરોજ પૂજા કરે છે એવા પ્રસાદીના શાલિગ્રામ ભગવાનની મહાપૂજા (પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૨,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ એકદિવસીય શ્રીહરિયાગ (યજ્ઞ)ના પાટલે બેસવાનો લાભ.

આથી વિશેષ સેવા કરીને વિશિષ્ટ યજમાન પદનો લાભ લેવા ઇચ્છતા ભક્તજનોએ કાલુપુર મહંત સ્વામી અથવા આગેવાન સંતોનો સંપર્ક કરવો.

Harikrushna Graphics • 982-5850-559, 987-9961-789

: महामहोत्सव का स्थल
तपोवन सर्कल, मोटेरा गाँव, अहमदाबाद

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान दुःखी नहीं होने देते

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

श्रीहरि भक्तवत्सल है, कीर्तन में कहा गया है कि ''संतो ना श्याम दोहती वेला नां दाम'' इसमें कोई शंका का स्थान नहीं है । सत्य वात यह है कि एकबार आषाढ महीने में महाराज आकाश की तरफ देख रहे थे, कहीं बादल दिखाई नहीं दे रहे थे । महाराज को बरसात की चिन्ता हो रही थी । इसके साथ ही सन्तों की तथा हरिभक्तों की चिन्ता तो थी ही । इसलिये संतो से कहने लगे कि हे संतो ! सुनो बड़ी आवश्यक वात कह रहा हूँ।

''इस आषाढ शुक्ल पंचमी को आकाश में यदि बिजली चमके तो ही गुजरात में रहियेगा, यदी नहीं चमके तो पूर्व के देश में चले जाइयेगा।''

दो-तीन दिन के बाद आषाढ शुक्ल पंचमी आई । पूरे दिन महाराज के वचन सभी संत याद करते रहे । आज रात में भी बिजली चमक जाय तो गुजरात में रहना है अन्यथा महाराज की आज्ञानुसार पूर्व में चला जाना है।

संध्या आरती हो गयी । संतो की नजर आकाश की तरफ है । आकाश में बादल धिरे है लेकिन बिजली चमक नहीं रही है । यद्यपि बिजली चमकी लेकीन बादलों के कारण दिखाई नहीं दी । दूसरे दिन जेतपुर जाकर संत रामदासभाई से पूर्व में जाने की आज्ञा लिये । लेकिन रामदासभाई स्नेह की मूर्ति थे, वे मन से आज्ञा नहीं दिये । महाराज की आज्ञा तो आज्ञा ही होती है । फिर भी उन्होंने कहा कि आप लोग रुक गये होते तो ठीक होता लेकिन महाराजकी आज्ञा है इसलिये जाइये । लेकिन गुजरात छोड़ ते समय गरजना के साथ वरसाद हो तो अवश्य वापस आजाइयेगा।

आज्ञा लेकर संत चलने लगे । महाराज की आज्ञा थी कि जंगल में होकर जाइयेगा । इस में नही गाँव आये नही नगर आये । चलते-चलते तीन दिन वीत गया । सभीसंत भूखे प्यासे थे । लेकिन महाराजकी आज्ञा थी, तप था । सभी संत प्रभु के लीला चरित्र का स्मरण करते जाते थे।

स्वामिनारायण भगवान को अपने संतो की चिंता होने लगी । इसलिये प्रभु ने व्यापारी का रुप बनाया और ग्राम्यमार्ग से चलकर आगेजाकर तम्बूडेरा डालकर खड़े हो गये । सामने जाकर मिले, उनसे पूछने लगे कि आप लोग किसके साधु है और किसकी भजन करते है ? आप लोगों का वश तथा मुख की प्रसन्नता एवं तेज देखकर यह ज्ञात होता है कि निश्चित ही प्रगट प्रभु की भक्ति करते हैं । यह सुनकर संतोने कहा कि हे श्रेष्ठीवर ! हम स्वामिनारायण भगवान के संत हैं । उन्हीं प्रगट प्रभु की उपासना, भजन, भक्ति करते हैं । अपने निजानंद में रहते हैं । व्यापारी ने संतो से कहा कि आप लोगों को देखकर हमारे मन में हो रहा है कि आप लोगों को अपने मंडप में भोजन कराऊँ । यदि आप लोग हाँ कहिये तो नजदीक में वडोदरा जिला का डभोई गाँव है वहाँ हम सभी चलें । सिद्धा एकत्रित करके ब्राह्मणों से भोजन तैयार कराके आप सभी को भोजन कराऊँ । संतोने हाँ कह दिया इसलिये कि उन्हें तीन दिन का उपवास हो गया था । हरि की इच्छा से यह व्यापारी मिला इसलिये वे लोग मना नही कर सके । संत प्रसन्न होकर भोजन किये और श्रेष्ठी से कहे कि शेठ ! हमलोग तीन दिन से भूखे थे, आपको भगवानने ही भेंजा है । प्रभु मन में मंद मंद हंस रहे थे । उसी समय खूब जोरो की वर्षा होने लगी । रामदासभाई के आज्ञा की याद आई कि रास्ते में भी वरसात हो तो भी वापस आजाना पूर्व में नही जाना । यह स्मरण करके संत मंडल वापस वडोदरा आ गया।

स्वामिनारायण भगवान कितने दयालु हैं । संतो को दूरदेश में जाने की आज्ञा करके भी ''वचनमां विश्वास रखे भजन मां भड़ी'' इसके अनुसार भगवान के वचन में विश्वास किये इसलिये भगवानने भूखे संतों को भोजन कराया और वरसात कराकर संतो को दूरदेश जाने नहीं

दिया।

इस तरह जो भगवान की आज्ञा का पालन करता है उनके वचन में विश्वास रखता है तो भगवान की आज्ञा के अनुसार आश्रितों को अन्न वस्त्र की कमी नहीं होती।

●

हृदय निर्मल बनजाय

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एकवार श्रीजी महाराज उत्तर गुजरात के ऊँझा गाँव में पधारे वट वृक्ष के नीचे रुके, उनके साथ काठी दरबारों के घोडे थे। महाराजने कहा, यह विशाल तालब है इसमें घोडो को पानी पिला लीजिये। सभी घुड़सवार पानी पिलाने गये लेकिन उस तालाब में सेवार इतनी अधिक थी कि पानी दिखाई नहीं देता था। इसलिये प्यासे घोड़ो को लेकर सभी वापस आ गये। महाराज ! तालाब तो बहुत बड़ा है लेकिन सेवार की अधिकता के कारण पानी दिखाई नहीं देता है।

उसी समय गाँव से बहुत सारे भक्त महाराज का दर्शन करने आये। जिस में मुमुक्षु, जिज्ञासु भक्त अधिक थे, सभी आकर खड़े थे, उन सभी ने महाराज से कहा कि हे स्वामिनारायण भगवान ! इस तालाब को किसी का बहुत बड़ा श्राप है कि पानी में से कभी काई जाती ही नही है। और यह तालाब बहुत बड़ा है। पूरा वर्ष उमसें पानी रहता है। परंतु पानि कीसी को काम का नही है। गाँव के लोगों की बाते सुनकर महाराज माणकी घोडी पर सवार हुए और उसे लेकर पानी में उतर गये। गाँव के लोग तालाब के किनारे खडे हो गये। श्रीजी महाराज की ही माणकी घोडी तालाब में जैसे-जैसे चलने लगी वैसे वैसे तालाब की सेवार उखड़ने लगी। महाराज के चरणों में स्पर्श हो उतनी गहराई के पानी में घोडी ले गई। इससे तालाब की सारी काई खतम हो गयी। और समग्र पानी निर्मल हो गया।

गाँव के लोगो ने अपनी नजरों से देखा कि स्वामिनारायण साक्षात् भगवान ही है। महाराजने अपने गाँव के लिए बहुत बड़ा काम किया है। गाँव वालोने उनके चरणो मे श्रीफळ चढाए। उस प्रसाद को पूरे गाँव में प्रसाद स्वरुप बांटा। ऐसा प्रभाव महाराजने ऊँझा में बताया।

प्यारे भक्तों जिस प्रकार पानी में जमी काई से समस्त पानी व्यर्थ हो जाता है उसी प्रकार हृदय में दुर्गुणों का वास हो जाता है। ऐसे हदय में जब परमात्मा का वास होता है तब हृदय निर्मल हो जाता है।

समस्त सत्संग को सूचना

समस्त सत्संग को ज्ञातव्य हो कि श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी (जि. सुरेन्द्रनगर) में रहनेवाले साधु भक्तवत्सलदास तथा साधु वन्दनप्रकाशदास दोनो संस्था छोड़कर चले गये हैं। वे त्यागाश्रम में भी नहीं है, इस लिये उनका संस्था के साथ कुछ लेना देना नही है। इसकी सभी सत्संगी लोग जानकारी करलें। आज्ञा से

प्रकाशन के लिये सत्संग समाचार तथा फोटोग्राफ भेजने वाले संत-हरिभक्तों को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रकाशन के लिये संत-हरिभक्तों को सूचित किया जाता है कि इ-मेईल एड्रेश पर ही अपने लेख भेंजे। फोटोग्राफ में पता को स्पष्ट लिखें। प्रत्येक मास की २० ता. तक आये हुये समाचार या फोटो ग्राफ को ही प्रकाशित किया जायेगा। इसकी सभी लोगजानकारी करलें। समाचार अत्यंत संक्षिप्त, विगतवार तथा अच्छे अक्षर में लिखकर भेंजे। (संपादकश्री)

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "मूल कारण अधूरा ज्ञान है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जीव जन्म लेने से पूर्व जब गर्भ के अन्दर रहता है तब ईश्वर से प्रार्थना करता है कि गर्भ में से बाहर निकल कर मैं आपका दास बनूंगा । आपकी भक्ति करुंगा, आप इस गर्भवास के दु:ख से मुक्त कीजिये । जब जीव गर्भ के बाहर आता है तब सबकुछ भूल जाता है । संसार की नाशवंत वस्तु को प्राप्त करने के लिये आकाश पाताल एक कर देता है । इसके बाद वह जीव इच्छित वस्तु को प्राप्त करते - करते अन्तकाल को प्राप्त हो जाता है । उस का जो शास्वत सुख है वह रह जाता है ।

लेकिन हम ऐसा होने नही देगें, क्योंकि ? हमें महाराज ने सत्संग देकर सब कुछ सरल कर दिया है । इसलिये सतर्क होकर विवेक पूर्वक ज्ञान प्राप्त करने की जरुरत है । परंतु हम जाग्रत नहीं रह सकते क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है । संसार नाशवंत है, क्षणिक है हमें ज्ञान है फिर भी मोह के अभी भूत होने से ज्ञान उद्दीप्त नहीं हो पाता वह भीतर छिपाही रह जाता है । इसलिये विचार करने की जरुरत है शरीर क्या है ? आत्मा क्या है ? जगत क्या है ? शरीर नाशवंत है । शरीर आत्मा के रहने का घर है । इसके भीतर रहने वाला आत्मा स्थाई है, वही अपना स्वरुप हैं । सभी क्रियायों से परे है तथा ज्ञान स्वरुप है । परंतु हम शरीर को देख सकते हैं आत्मा को नहीं । इलिये उसे हम भूल जाते हैं । जिस तरह चकमक पत्थर हो, उसके भीतर अग्नि होती है फिर भी हम उसे देख नही सकते । जब उस पत्थर को घिसते है तब वह दिखाई देती है । इसी तरह इस शरीर को सत्संग रुपी घर्षण मिलेगा तभी आत्मा का दर्शन संभव है । अर्थात् आत्मा का ज्ञान से अनुभव किया जा सकता है । यह जगत कार्य क्षेत्र है । कर्मकरने की जगह है । इस संसार में रहकर कुछ प्राप्त करना संभव है । वह प्राप्त करने लायक मात्र सत्संग है । हमें सत्संग मिला है इसलिये सबकुछ प्राप्त होगया है । मात्र जरुरत है पुरुषार्थ करने की । जिस तरह विद्यार्थी जब विद्यालय जाता है तब उसकी पूर्व तैयारी होती है । उसके पास विद्याप्राप्ति के सभी साधन होते है - पुस्तक - पेन- शिक्षक इत्यादि । शिक्षक ध्यानपूर्वक पढाते हैं फिर भी विद्याप्राप्ति विद्यार्थी के ऊपर होता है । उसे अधिक तैयारी करना है, लिखना है, याद करना है, घन्टो-घन्टो तक चिन्तन करना है, मन के अनुकूल चित्र बनाना है, अथवा पन्ने फाडने हैं । इसी तरह हम भी सत्संग में आये है तो महाराज हम सभी के लिये तैयार करके दिये हैं । हमें मंदिर दिये है, संतो को दिये है, आचार्यश्री को दिये है, सत् शास्त्रो को दिये है. अब इसके बाद हमारा यह कर्तव्य है कि सत्संग में से हम क्या प्राप्त करते हैं । सत्संग में से ज्ञान प्राप्त करके परमात्मा तक पहुंचना है । संसार में फंसना नहीं है । सत्संग मिला है इसलिये हम अवश्य संसारचक्र से उबर सकते हैं । सत्संग का सहारा लेकर अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है । सत्संग अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाता है । हम जमीन में बीज डालते है तो बीज उगते है इसी तरह सत्संग में एक-एक पल उग निकलता है । इसलिये सत्संग का बल रखना चाहिये । हम ऐसा नहीं करते बल्कि संसार के नाशवंत पदार्थो में अपना मन लगाते है । संसार के हम दास बन जाते हैं । अज्ञान के कारण झूठा आभास होने लगता है । आत्मा नहीं हूँ, मैं शरीर हूँ तब उसमे रजोगुण की वृद्धि होती है । उस समय उसके मन में अनेक विचार आने लगते है । जो सतोगुणी होते हैं । उनके भीतर भी रजोगुण तथा तमो गुण का विक्षेप तो आता ही है । यदि सतोगुण के साथ निवेक हो तो वैराग्य के भाव आयेंगे और उसके मन में यह भाव आयेगा कि मेरा इस रास्ते में चलने से पतन होगा । यह सब तभी संभव है जब सत्संग का पूर्ण बल हो । आत्यंतिक उन्नति की अभिलाषा हो तो सत्संग करना चाहिये । सत्संग के माध्यम से दानव प्रकृति वाला मानव प्रकृति का हो जाता है । दानव प्रकृतिवाला धर्म की जगह पर धन, संत की जगह पर संपत्ति, समता की जगह पर ममता की चाहना करता है । किसी के प्रति खराब विचार किसी का नुक्शान करने की भावना जिस में हो वह दानव प्रकृतिवाला होता है । दो मिनट के लिये भी किसी की निन्दा करें तो वह हजार माला फेरने को भी व्यर्थ कर देता है । इसलिये अपने विचारों को सत्संग के माध्यम से पवित्र बनाकर रखने से आत्मकल्याण प्राप्त होगा ।

अपने पास समय बहुत कम है - राजा हो या रंक सभी को एकदिन जाना है । थोडे समय में सबकुछ करना है । यह

मेरा यह तेरा का भाव छोडकर भगवान की भजन करनी चाहिये। यही एकमात्र श्रेय का साधन है। कोई किसी के साथ जाने वाला नहीं है। अंत समय सबकुछ छोड़कर जाना है। इसलिये महाराज की आज्ञा में रहकर भजन-भक्ति करते रहने से तथा नीति-रीति को समझकर वैसा आचरण करने से निश्चित ही यह लोक तो सुधरेगा ही परलोक भी सुधरेगा। अन्तर शुद्धि तथा बाह्य शुद्धि दोने शुद्धि समान भाव से रखकर निर्मल मन में प्रभु का स्मरण करते रहने से अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है।

आज निर्जला एकादशी आप लोगों ने की है। इसलिये महाराज से प्रार्थना करते हैं कि आप सभी को महाराज तप तथा भक्ति से पुष्ट करें।

●

पवित्र श्रावण मास

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता.कडी)

यद हेश धर्म के विना या भगवान के विना चल सकता है क्या ? श्रावण मास में विशेष पाठ-पूजा या दर्शन करने का नियम है। इस महीने में धार्मिक कार्य करने का विशेष महत्व है। यद्यपि भगवान का दर्शन तथा भजन बारह महीने कल्याण कारी है। यह दर्शन करने का योग मुमुक्षुओं को अनेक प्रकार से कल्याणकारी है। बड़े मंदिर हों या छोटे मंदिर हो सभी कल्याण के साधन है।

इसके अलांवा प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में भी पूजा-पाठ तो करता है उसमें भी भगवान का दर्शन होता है। भारत देश में जगह-जगह पर अपने इष्टदेव ने जिन वस्तुओं का उपयोग किया है उन प्रसादी की वस्तुओं में भी भगवान का दर्शन होता है। लेकिन उन वस्तुओं में प्रभु के प्रसादी का भाव होना चाहिये। अपने घर में जो भी शुभ प्रसंग आता है या शुभ कार्य करते है, घर में सभा करते है, सायंप्रातः आरती पूजा करते है, रात्रि शयन के पूर्व जो भगवान की प्रार्थना करते हैं उन सभी में भगवान का दर्शन होता है। लेकिन यह दर्शन का भाव प्रतिदिन नूतन भावों वाला होना चाहिये। घन्टों तक भगवान के सामने खड़े हो या माला फेरते हो लेकिन जब घर पहुंचे तो सब कुछ भूल जाता है।'' इसलिये दर्शन की रीति में अब परिवर्तन लाना जरुरी है।

गाँवो में साधु-संत रास्ते में चलते मिलते है तो गृहस्थ लोग भावपूर्वक प्रणाम करते हैं। शहर के लोग ऐसा नहीं करते। वे मंदिर में जब आते हैं उस समय साधु-संतो के मिलने पर प्रणाम करते हैं। इसका विवेक सभी को होना चाहिये। जब भी दर्शन का योग बने तो एकाग्रभाव से दर्शन करे और उसका सदा चिन्तन करता रहे।

हम जब पूजा करते हो उस समय बगल में टी.वी. चलती हो तो ध्यान प्रभु की तरफ से हटकर टी.वी. की तरफ आ जाने से ध्यान भंग हो जायेगा। पूजा स्थल के पास दैनिक समाचार पत्र रखा हो तो माला फेरते समय ध्यान वहाँ चला जायेगा। ऐसे विचारवालों को पूर्णफल नहीं मिलता। दर्शन में भाव न रहने से नवीन भाव भी नहीं आते। प्रत्येक के भीतर भगवान तो हैं ही, लेकिन उनका दर्शन प्रत्यक्षरुप से कब संभव होगा, जब अन्तर बाह्य का भाव एकरुप होगा तभी देव के भजन भजन में आनंद आयेगा। संयम की आवश्यकता होती है ध्यान की मुद्रा अर्जुन की तरह होनी चाहिये। जिस तरह गुरु द्रोण कौरव और पाण्डवो के बाण विद्या की परीक्षा लिये उस समय सभी से पूछे ऊपर क्या दिखाई दे रहा है - किसी ने कहा वृक्ष, पक्षी, पत्ते, डाली इत्यादि देखने की बात किये लेकिन जब अर्जुन से पूछे तो अर्जुनने कहा कि पक्षी की आंख दिखाई दे रही है। इसी तरह संयम-विवेक से, एकाग्रता से कोई भी कार्य किया जाय तो उसमें सफलता अवश्य मिलेगी। दर्शन के समय आंख के साथ मन को भी लगाना चाहिये। तभी दोनो के समन्वय से पूर्ण दर्शन का लाभ मिलेगा। भगवान की भजन भक्ति करने से पारिवारिक क्लेश दूर होता है, मन में शांति मिलती है। व्यापार-धंधा में बरक्कत होती है। पारिवारिक एकता बढती है यह सब प्रभु के भजन का प्रभाव है। प्रतिदिन भगवान की प्रार्थना करते समय यह कहना चाहिये कि हे प्रभु ! आप हमें भक्ति प्रदान की जिये और संसार के मोह माया के बन्धन से दूर कीजिये जिस से मैं आप के भजन भक्ति में लवलीन रह सकूं। ऐसा कहते रहने से भगवान एक दिन अवश्य प्रार्थना सुनेंगे।

श्री स्वामिनारायण मासिक के वार्षिक शुल्क भरने वाले सदस्यों को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक के वार्षिक शुल्क भरने वाले सदस्यों को सूचना है कि प्रत्येक वर्ष जब शुल्क भरें तो एम.ओ. अथवा चेक या प्रत्यक्ष भरने आवें तो उसका सदस्य नम्बर अवश्य लिखें। कितने सदस्य सदस्यता का. नं. नही लिखते। सदस्यता नं. के बिना शुल्क नही लिया जायेगा। एम.ओ. के फार्म में शुल्क भेंजते समय भेंट / शुल्क इत्यादि लिखना आवश्यक है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायदेव के सानिध्य में आषाढ शुक्ल-१५ ता. १२-७-१४ को प्रातः ८-०० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर से मंदिर में आगमन के शुभ अवसर पर मंदिर के महंत स्वामीने भव्य स्वागत किया था। सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती का दर्शन करके सभा में विराजमान हुये थे। मंदिर के गोर कमलेशभाईने स्वस्तिवाचन किया था। बाद में गुरु पूजन के यजमान श्री लालजीभाई करशनभाई केराई रामपर वेकरा (कच्छ) वर्तमान में गांधीधाम आदि परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। अमदावाद मंदिर श्री नरनारायणदेव स्कीम कमिटी के सदस्योंने भी पूजन-आरती की थी। गुरुपूजन महोत्सव का सभा संचालन स्वामी नारायणवल्लभदासजीने किया था। अनेक देशों से आये हुये धर्मकुल के आश्रित हरिभक्त १२ बजे तक गुरु पूजन करके चरण स्पर्श के साथ भेंट भी रखे थे। प.पू. महाराजश्री का आशीर्वाद को प्राप्त करके सभी धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

प्रासंगिक सभा में पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने समस्त सम्प्रदाय सत्संग के गुरु के स्थान पर दोनो देशों के आचार्य पद पर श्रीहरि द्वारा स्थापित धर्मकुल परंपरा में से ही होना चाहिये इस तरह की वात कहकर सप्रमाण उदाहरण के साथ समझाया था। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

अनेक धामों से पधारे हुये संत-हरिभक्तों को मंदिर की तरफ से प्रसाद (भोजन) की व्यवस्था की गयी थी। समग्र प्रसंग में स्वामी हरिचरणदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, को. स्वा. जे.के., को. मुनि स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, नटु स्वामी, राम स्वामी (भंडारी) इत्यादि संत मंडलने संत-हरिभक्तों की सेवा करके प्रसन्न किया था। (को. शा. नारायणमुनिदास)

श्री नरनारायणदेव देश के भावि आचार्य महाराजश्री का १७ वाँ प्रागट्योत्सव

श्री नरनारायदेव के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का १७ वाँ प्रागट्योत्सव आषाढ कृष्ण-१० ता. २१-७-१४ को अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में धूमधाम के साथ मनाया गया था। मंदिर के चौक में प.पू. लालजी महारजश्री का स्वागत असारवा गुरुकुल तथा कोटेश्वर गुरुकुल के बालकों ने बैंड बाजा द्वारा अद्‌भुत कौशल्य के साथ किया गया था। प्रत्येक धाम से संत तथा प्रत्येक गाँव से हरिभक्त इस स्वागत में उपस्थित थे।

उत्सव के बाद श्रीहरि के ६ड़े, ७ वें तथा ८ वें वंशज द्वारा श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती की गयी थी। बाद में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप सभा में बिराजमान हुये थे। मंदिर के गोर श्री कमलेशभाईने स्वस्ति वाचन किया था। पूजन के यमजान श्री कांतिभाई केशरा भूडीया इष्ट लंडन (फोटडी) कृते उनके छोटेभाई श्री दिनेशभाई भूडीया ने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके चरण में भेंट रखकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। बाद में सभा में असारवा गुरुकुल तथा कोटेश्वर गुरुकुल के विद्यार्थियों ने आदिवासी वेशभूषा में गर्वा का नृत्य किया था। बाद में पू. महंत स्वामी अमदावाद, जेतलपुरधाम, नारणघाट, असारवा गुरुकुल, छपैयाधाम, वडनगर मंदिर, मूली मंदिर इत्यादि अनेकों धाम से संत महंत तथा स्कीम कमिटी बोर्ड के सदस्यों ने प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारकर शुभेच्छा प्रदान की थी।

श्री नरनारायणदेव के महामहोत्सव के उपलक्ष्य में संप्रदाय के मुख्य महाग्रन्थ श्री वचनामृत (२७३) तथा श्री भक्तचिंतामणी का प्रकाशन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञासे किया गया जिसका विमोचन प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ। जिस के दाता श्री लक्ष्मणभाई भीमजीभाई राघवाणी, अ.नि. श्री कानजीभाई भीमजीभाई राघवाणी, श्री प्रेमजीभाई केशराभाई राघवाणी इत्यादि परिवार थे। (बलदिया कच्छ) तथा अपनी उम्र के ६० वर्ष (षष्ठि पूर्ति) के उपलक्ष्य में प्रत्येक मंदिर को दान करने के हेतु से श्री नानजीभाई शामजीभाई भुडीया (कच्छ-फोटडी - वर्तमान में लंडन) इत्यादि हरिभक्त परिवार ने प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारकर पूजन करके धर्मकुल का आशीर्वाद प्राप्त किया था। प्रासंगिक सभा में स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स्वा. निर्गुणदासजी, इत्यादि संतोने प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा प्रदान की थी। प्रासंगिक सभा में स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स्वा. निर्गुणदासजी, इत्यादि संतोने प.पू. महाराजश्री को शुभेच्छा प्रदान कीथी। प्रासंगिक सभा में शास्त्री स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) तथा शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाराणघाट) ने सभा संचालन किया था।

अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री अपने आशीर्वाद में बताया कि आज यदि किसी को अधिक आनंद है तो मुझे हैं। वह इस लिये कि लालजी महाराजश्री अब देश विदेशमें शिबिर का आयोजन करके भावि पीढी को तैयार कर रहे हैं। हम उनके विवाह में सूट पहनेंगे, इस तरह कहकर प.पू. लालजी महाराजश्री के बालपन के प्रसंगो का स्मरण किये थे।

बाद में प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी संत हरिभक्तों को

श्री नरनारायणदेव की निष्ठा रखने का शुभाशीर्वाद दिया था।

(शा. नारायणमुनिदासजी)

छपैयाधाम में महिला सत्संग शिबिर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा से तथाउनके सानिध्य में ता. ३०-५-१४ से ता. १-६-१४ तक तृतीय महिला सत्संग शिबिर दंढाव्य प्रदेश के ४० गाँवो की १५०० जितनी बहनो की छपैयाधाम के शिबिर में उपस्थिति हुई थी। अमदावाद कालुपुर मंदिर (हवेली) की सां.यो. बहनो के वक्तापद पर ''श्री घनश्याम बालचरित्र'' की कथा संपन्न हुई थी। जिस में घनश्याम जन्म भूमि में घनश्याम महाराज के जन्मोत्सव का सभी को लाभ मिला था।

इस प्रसंग पर पू. श्री राजा के शुभ वरद् हाथों से आगन्तुक सभी हनो को चोकलेट का प्रसाद दिया गया था। ता. ३१-५-१४ को सभी की प्यारी पू. श्रीराजा के जन्मोत्सव को बहनों ने बडी दिव्यता के साथ मनाया था। ता. १-६-१४ को प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी के आशीर्वचन का लाभ तथा चरण स्पर्श का लाभ सतत तीन दिन तक मिलता रहा। इससे बहने अपने जीवन को धन्य मानती थी। अमदावाद (कालूपुर) मंदिर की सां.यो. बहनो द्वारा तप्तमुद्रा (छाप) सभी बहनो को दी गयी थी। शिबिर में आई हुई सभा बहने अपने जीवनको धन्य मान रही थई।

(रुपल बहन - बापुनगर)

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में अधोनिर्दिष्ट गाँवो में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग सभा हुई थी

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया

ता. २२-६-१४ रविवार को रात्रि ८-३० बजे श्री स्वामिनारायण मंदिर में शा. पी.पी. स्वामी (छोटे), शा .माधव स्वामी इत्यादि संतोने गाँव के भक्त एवं डागरवां, आनंदपुरा, करजीसण इत्यादि गाँवो के हरिभक्तों को सभा का लाभ दिया था। सोजा गाँव से श्री नरनारायणदेव भजन मंडल ने नंद संतो के कीर्तन गाया तथा बालकों ने रासगर्वा किया।

(को. महेन्द्रसिंह चौहाण)

रिद्रोल गाँव में सत्संग सभा

आषाढ शुक्ल-११ ता. ८-७-१४ को रात्रि ८-३० बजे से ११ बजे तक सभा का आयोजन किया गया था। जिस में नारायणघाट के महंत शा. पी.पी. स्वामी, कालुपुर के श्रीजी स्वामीने कथा का लाभ दिया था। सभी हरिभक्तों को आज के दिन संकल्प करवाया गया कि सभी लोग प्रतिदिन मंदिर में दर्शनार्थ आवें। इस प्रसंग पर अहमदावाद के श्री विठ्ठलभाई पटेल भी पधारे थे।

(जयंतीभाई पुजारी)

व्यास पालडी

व्यास पालडी गाँव में ता. १९-७-१४ को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में शा. पी.पी. स्वामी, शा. अभय स्वामी इत्यादि संत मंडलने श्री नरनारायणदेव महोत्सव के विषय में जानकारी दी थी, साथ में भगवान के लीला चरित्र का वर्णन भी किया था।

सभा के विसर्जन होने पर आरती का दर्शन करके सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान के लिये प्रस्थान किये थे। श्री नरनारयणदेव युवक मंडल बिलोदरा के युवानो ने कीर्तन भजन करके सभी को आनंदित किया था।

(शा. चैतन्यस्वरुपदासजी, कोटेश्वर)

दहेगाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर में १५१ मिनट की महामंत्र धुन

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव में ता. १९-७-१४ को रात्रि ७-३० से १०-०० बजे तक संत-हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की थी। इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नरोडा के युवानोने तथा गाँव के छोटे-बडे सभी हरिभक्तोंने तन-मन-धन से सेवा की थी। प्रासंगिक सभा में स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर), शा. मुनि स्वामी (कालुपुर) इत्यादि संतोने सर्वोपरि मंत्र की सर्वोपरि माहात्म्य समझाया था। महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी।

(को. श्री दहेगाँव)

काशीन्द्रा गाँव में सत्संग सभा

ता. १८-७-१४ को रात्रि में श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा में संतो द्वारा सत्संग सभाका आयोजन किया गया था। चैतन्य स्वामी (कोटेश्वर), शा. छपैयाप्रसादजी, को. मुनि स्वामी (कालुपुर) इत्यादि संतोने परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की महिमा के साथ आगामी उत्सव की रुपरेखा समझाई थी। गाँव के हरिभक्त सभा में भाग लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

(को. श्री काशीन्द्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमीज

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमीज में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नरोडा द्वारा ता. २०-७-१४ को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। गाँव के प्रत्येक हरिभगत तथा अगल-बगल के गाँवो के हरिभगत सभा का लाभ लिये थे। संतो में चैतन्य स्वामी (कोटेश्वर), छपैया स्वामी, चेतन स्वामी (वहेलाल), नीलकंठ स्वामी इत्यादि संतोने आगामी महोत्सव की रुपरेखा का वर्णन किया था। भगवान की महिमा का भी वर्णन किया गया था। अन्त में भगवान की आरती के बाद सभी प्रसाद लेकर विदा हुए थे।

(को. श्री धमीज)

अहमदाबाद शाहीबाग में सत्संग सभा

शाहिबाग विस्तार में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नारायणघाट द्वारा सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा की यजमान अ.सौ. भगवतीबहन प्रवीणभाई (माणसावाला) थी। सभा में चैतन्य स्वामी (कोटेश्वर) ने संत मंडल के साथ आकार आगामी श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव की जानकारी दी थी। शा. दिव्य स्वामी तथा बालु स्वामीने भगवान की महिमा समझाई

थी । अन्त में ठाकुरजी की आरती के बाद सभी प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये थे ।(श्री न.ना.देव युवक मंडल, नारायणघाट)

मुबारकपुर गाँव में सत्संग सभा

यहाँ पर ता. २१-७-१४ को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर सा. पी.पी. स्वामी (नारणघाट) तथा शा. चैतन्य स्वामी (कोटेश्वर) इत्यादि संत मंडल ने परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की महिमा के साथ आगामी महोत्सव की जानकारी दी थी । कीर्तन भक्ति के साथ सभा प्रारम्भ हुई । अन्त में मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी की आरती करके सभी प्रसाद ग्रहण किया और अपने घर प्रस्थान किये ।

(को. श्री मुबारकपुर)

मोटेरा गाँव में भव्य सत्संग सभा

भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य चरणों से अंकित मोटेरा गाँव में संत हरिभक्तों के सहयोग से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल मोटेरा के युवानो द्वारा कीर्तन भजन के बाद शा. पी.पी. स्वामी (नारणघाट), शा. चैतन्य स्वामी, शा. कुंज स्वामी तथा श्रीजी स्वामी भगवान की महिमा के साथ आगामी महोत्सव की जानकारी दी थी २०० जितने हरिभक्त सभा का लाभ लेकर भोजन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव करते हुये प्रस्थान किये। (को. चौधरी अमृतभाई जे.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सोजा में सत्संग सभा

यहाँ के मंदिर में ता. २६-६-१४ को सुन्दर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । इस सभा में शा. पी.पी. स्वामी (नारणघाट), शा. माधव स्वामी, जसु भगत ने सर्वोपरी श्रीहरि की लीला का वर्णन किया था । यहाँ के युवक मंडलने भजन-कीर्तन किये थे । २०० जितने हरिभक्त सभा का आनंद लेकर कृतकृत्य हो गये थे । (को. श्री मोती राम पटेल)

जनतानगर चांदखेडा

जनतानगर चांद खेडा में ता. ८-६-१४ को रात्रि में ८-०० बजे से १०-३० तक श्री दिनेशभाई भावसार के बंगले में श्री स्वामिनारायण महामंत्र का ४ घंटे की अखंड धुन की गई थी । इस प्रसंग पर कालुपु रमंदिर से योगी स्वामी, माधव स्वामी तथा पुराणी धर्मजीवन स्वामीने धुन की पुर्णाहुति की थी । आरती उतारकर यजमान परिवार को पुष्पहार पहनाकर प्रसन्न किया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा (कडीयावाड)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १५-६-१४ को सायंकाल ६ से ८-३० बजे तक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में अमदावाद मंदिर से शा. मुनि स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी (कोटेश्वर), शा. माधव स्वामी, तथा कुंज स्वामी इत्यादि संतोने श्री नरनारायणदेव की महिमा का गुणगान किया था । अन्त में ठाकुरजी की आरती के बाद सभी प्रसाद ग्रहण करके प्रस्थान किये थे । (श्री नरनारायण युवक मंडल - लुणावाडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महुन्द्रा में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नरोडा द्वारा महुन्द्रा गाँव श्री स्वामिनारायण मंदिरे में ता. १३-७-१४ को शा. चैतन्य स्वामी, को. नारायणमुनि (कालुपुर), शा. छपैया स्वामी, शा. हरिजीवन स्वामी, नटु स्वामी इत्यादि संतोने श्री नरनारायणदेव का तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था ।

नरोडा युवक मंडल द्वारा सादरा देश के सभी विस्तारों में सभा का आयोजन किया जाता है ।(श्री न.ना.यु. मंडल - नरोडा)

वर्धा के मुवाडा गाँव में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नरोडा द्वारा सादरा देश में आयोजित तीसरी सत्संग सभा ता. ११-७-१४ को वर्धा के मुवाडा गाँव में की गयी थी । सभा में हरिस्वरुप स्वामी, छपैयाप्रसाद तथा आनंद स्वामीने हरिभक्तो श्री नरनारायणदेव के माहात्म्य के साथ महोत्सव की रुपरेखा बताई थी । अगल बगल सलकी इत्यादि गाँवो के हरिभक्त भी इस सभा में भाग लिये थे ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - नरोडा)

नांदोल गाँव में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नरोडा द्वारा ता. ५-७-१४ को नांदोल गाँव में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में शा. स्वा. चैतन्यस्वरुप (कोटेश्वर), सा. आनंद स्वामी, को. नारायणमुनि (कालुपुर) इत्यादि संतमंडलने देव-आचार्य के महिमा का गुणगान किया था । इस के साथ ही आगामी महोत्सव की जानकारी दी थी । २०० जितने हरिभक्त सभा का लाभ लिये थे।

प्रत्येक सभा में श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में धार्मिक तथा सामाजिक कार्यो को भी वेग मिले इस हेतु से प्रवृति की जाती है। (श्री न.ना.देव युवक मंडल-नरोडा)

डांगरवा से श्री नरनारायणदेव के दर्शन की पदयात्रा

समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से ता. ११-७-१४ को डांगरवा वांटो तथा तलपद के हरिभक्तों के सहयोग से परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पदयात्रा गुरुपूर्णिमा के दिन अमदावाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके पूर्ण की गयी थी । समग्र पदयात्रा में शा. माधव स्वामी प्रेरक थे । डाभी रजुजी शिवाजी (वांटो) पटेल बलदेवभाई बी (तलपद) तथा श्री नरनारायण युवक मंडल के अगुआ डाभी अनंतसिंह इत्यादि की सेवा सराहनीय थी । (कोठारीश्री डांगरवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेकनिकल रोड) घाटलोडिया में रात्रि पारायण तथा पदयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १६-५-१४ से ता. १९-५-१४ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया था । जिस के वक्ता स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) थे । प्रेरक शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट)ने सुंदर सभा का संचालन किया था

। इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर तथा नारणपुरा मंदिर से संत पधारे थे । पारायण के यजमान श्री सुरेशभाई पी. अमीन परिवार थे । ता. १९-५-१४ को पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री पधारकर सभी भक्तों को श्री नरनारायणदेव में निष्ठा रखने का निर्देश दिया था । और यह भी कहा कि किस तरह करने से सभी के वृद्दि के साथ सत्संग में वृद्धि होगी । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी पधारकर बहनो को आशीर्वाद दी थी । ता. ९-६-१४ सोमवार को निर्जला एकादशी को श्री नरनारायणदेव दर्शन के लिये पदयात्रा का आयोजन किया गया था । (समस्त हरिभक्तों द्वारा आर.सी. टेकनिकल रोड)

वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज का ५३ वाँ पाटोत्सव मनया गया

ऐतिहासिक नगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज का ५३ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ हाथों से कृष्ण पक्ष १२ ता. २४-६-१४ को अ.नि. भावसार विमलाबहन जगजीवनदास परिवार के यजमान पद पर सम्पन्न हुआ ।

प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने भारत के मा. वडाप्रधान श्री नरेन्द्रभाई के ज्येष्ठ भाई आदरणीय सोमाभाई मोदी का, वनडगर मामलतदारश्री तथा पिताश्री म्होबतसिंह का भी सन्मान करके पुष्पहार पहनाकर किया ।

इस शुभ प्रसंग पर यजमानश्री के भाईश्री भगवानभाई जे. भावसार तथा श्री जयंतीभाई जे. भावसार परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती की ।

सभा में मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा अहमदाबाद के स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा वडनगर के मंदिर के कोठारी शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने अपनी प्रेरक अमृतवाणी में वडनगर मंदिर का माहात्म्य कहा ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री श्री नरनारादणदेव की लीला सुनाकर हरिभक्तो को नियम, निश्चय तथा पक्ष में रहने के आशीर्वाद दिये । श्री नविनभाई मोदी ने आभार विधिकी ।

(कोठारी स्वामी, वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी, ४२ वे प्रागटयोत्सव के उपलक्ष में अखंड धून तथा सत्संग सभा का आयौजन किया

समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद तथा जेतलपुर के स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू. शा. पी.पी. स्वामी तथा मंदिर के महंत स.गु. विश्वप्रकासदासजी की प्रेरणा से कलोल पंचवटी के मंदिर में ४२ वाँ प्रागटयोत्सव तथा गादी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में २४ घंटे की अखंड महामंत्र धून की गयी । जिस में युवक मंडल, बालमंडल, बालिका मंडल तथा महिला मंडल ने धून का लाभ लिया था । जेतलपुर सेसंत मंडल पधारकर धून की पूर्णाहुति की आरती की ।

कलोल पंचवटी मंदिर में पूज्य स.गु. शा. पी.पी. स्वामी तथा मंहत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल द्वारा कलोल विस्तार में ४२ वाँ प्रागटयोत्सव तथा गादी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्षमें ६० सत्संग सभा करके सभी भक्तों को धर्मकुल के प्रति निष्ठा का गुनगान किया । मंडल द्वारा आसपास के गाँवो में ३० सभाए की गयी । जेतलपुर, कांकरिया, जमीयतपुरा, कलोल मंदिर के संतो द्वारा कथा वार्ता की गयी । (श्री न.ना.देव युवक मंडल, कलोल)

४२ वाँ प्रागटयोत्सव के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा में महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा जेतलपुर के पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४२ वे प्राकट्योत्सव के उपलक्ष में ता. १५-६-१४ को कालीयाणा मंदिर में समूह महापूजा की गयी । जिस में ४२ भक्तों ने भाग लिया । शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरीया) तथा शा. भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) आदि संतोने महापूजा विधिपूर्वक किया । ता. २२-६-१४ को ४२ घंटो की अखंड धुन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा की गयी । (अरजणभाई मोरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से इस पर्ष का बारिश कम होने के कारण परोपकार की भावना से बारिश हो इस हेतु से श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयों का) में १ घंटे तक तथा बहनो के मंदिर में ता. २६-६-१४ को ३ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गयी । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेधाणीनगर में सत्संग सभा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मेघाणीनगर मंदिर सत्संग समाज के साथ सहकार से प्रत्येक रविवार को तथा प्रत्येक एकादशी को रात्रि सत्संग सभा की गयी । रविवार की सभा में श्री जयंतीभाई सुतरीया (बापुनगर) धून, कीर्तन तथा कथा वार्ता का लाभ देते हैं । एकादशी की सभा में अहमदाबाद मंदिर के संतगण कथावार्ता का लाभ देते है । ज्येष्ठ कृष्णपक्ष-११ एकादशी को सभा में कालुपुर मंदिर से धर्मप्रवर्तक स्वामी, श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. स्वामी मुकुंदानंदजी पधारे थे । ब्रह्मचारी स्वामीने विवेचन के साथ नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन गाया । (गोरधनभाई सीतापरा)

भाभर श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल द्वारा अबासणा गाँव में सत्संग सभा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से भाभर (बनासकांठा) जिले के अलासणा गाँव में ता. २८-६-१४ को रात में भाभर श्री नरनारायण सत्संग मंडल द्वारा सत्संग सभा में यमदंड की तथा

व्यसन मुक्ति की विडियो फिल्म बतायी गयी । आसपास के गाँव के लोगोने भाग लिया । सभा की यजमान श्रीमती गेनीबहन ठाकोर थी । जिल्ला पंचायत के सदस्य भुराजी ठाकोर तथा सरपंचश्री मानसंगजी ठाकोरने सुंदर व्यवस्था की । ५०० भक्तोने सभा का लाभ लिया । श्री नटुभाई कानाबार द्वारा सभा का आयोजन किया जाता है। (रमेशभाई कानाबार, भाभर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली में श्रीराधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराजश्री मांडवरायजी प्रवेशद्वार का उद्घाटन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी के मार्गदर्शन से मूली गाँव के मेइन रोड के ऊपर राजस्थान के बंशी पहाडपुर के गुलाबी पत्थर से मंदिर द्वारा सुंदर नयनरम्य ''श्रीराधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज श्री मांडवरायजी प्रवेश द्वार'' गुरुपूर्णिमा ता. १२-७-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से उद्घाटित किया गया था । इस प्रसंग पर गाँव के सभी स्थानिक क्षत्रिय उपस्थित थे ।

बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री अपने मंदिर के ठाकुरजी का दर्शन करके श्री ब्रह्मानंद सभा मंडप में बिराजमान हुये थे । यहाँ के महंत स्वामी, आज के गुरुपूजन के यजमान परिवार श्री जयंतीभाई पटेल, श्री नवीनभाई मांडलिया तथा मूली के पू. संत तथा हरिभक्त सभी ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । मंदिर के गोर द्वारा स्वस्ति वाचन किया गया था । संत मंडल तथा यजमान परिवारने समूह में गुरुपूजन के बाद आरती की थी । प्रासंगिक सभा में पू. महंत स्वामी तथा शा. चैतन्यस्वरुपदास (कोटेश्वर)ने गुरु की महिमा पर प्रकाश डाला था । शा. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने गुरु पूर्णिमा को धर्मकुल का क्या महत्व है इस पर चर्चा की थी । अन्त में पू. बड़े महाराजश्रीने श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की निष्ठा-उपासना-निश्चय रखने का आशीर्वाद दिया था । हजारो भक्तोंने प.पू. बड़े महाराजश्री का चरण स्पर्श का लाभ लिया था । सभा संचालन शैलेन्द्रसिंहने किया था। आज के प्रसंग पर भोजनालय में को. ब्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, जे. के. स्वामी, भरत भगत तथा प्रवीण भगतने सुंदर सेवा की थी ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायणमंदिर वोशिंग्टन डी.सी. प्रथम पाटोत्सव

आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर एम.डी.डी.सी. का प्रथम पाटोत्सव ता. २३-६-१४ से २०-६-१४ तक समग्र धर्मकुल के पावन उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था । डी.सी. के सभी हरिभक्त सहयोग की भावना के साथ इस उत्सव को संपन्न किये ते । इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह का आयोजन भी किया गया था । कथा शा. स्वा. अभयप्रकासदासजीने किया था ।

पाटोत्सव के पावन प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, प.पू. लालजी महाराजश्री, पू. श्रीराजा, पू. बीन्दुराजा तथा श्री सौम्यकुमार एवं सुव्रतकुमार की शुभ उपस्थिति का सभी हरिभक्तों ने दिव्य लाभ लिया था । पाटोत्सव के अवसर पर पू. श्रीराजा का जन्मदिन होने से बड़ी दिव्यताके साथ जन्मोत्सव भी मनाया गया था । यहाँ के महंत स्वामी व्रजभूषणदासजी तथा स्वा. रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से समग्र उत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया । इसके साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सत्संग का विकास देखकर खूब प्रसन्न हुये थे । इस से भी अधिक वृद्धि हो ऐसा आशीर्वाद भी दिये थे । मंदिर में वरसों से प्रेसिडेन्ट की सेवा करने वाले श्री कनुभाई पटेल की सेवा की प्रसंशा किये थे । उनके स्थान पर श्री राजूभाई पटेल को सेवा का उत्तरदायित्व दिये थे । सतत सात दिन तक कथा-प्रसाद का सभी को लाभ मिला था । विशेषरुप से धर्मकुल का आशीर्वाद तथा पाटोत्सव का दर्शन स्मृतिदायक था ।

(शा.स्वा. रामकृष्णदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा (जी.ए.) तृतीय पाटोत्सव संपन्न

श्रीहरि की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी सत्यस्वरुपकी प्रेरणा से तथा जेतलपुर धाम के स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा का तृतीया पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ३ जुलाई से ५ जुलाई २०१४ तक श्रीमद् सत्संगीजीवन द्वितीय प्रकरण की कथा शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी । इसके साथ बालक-बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया था।

ता. ५-७-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक किया गया था । सभा में यजमान परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री की तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारी थी । यहाँ पधारे हुए संतो ने प्रेरक आशीर्वचन दिया था । बहनो की सभा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने बहनो को आशीर्वाद देते हुये कहा कि सत्संग की इससे भी अधिकवृद्धि हो । इस प्रसंग में अनेकों धाम से संत पधारे थे । यु.के. के ४५ हरिभक्त तथा आटलान्टा एवं अगलबगल के ७०० जितने हरिभक्त सभा में बैठे थे । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को सुख शांति-समृद्धि का आशीर्वाद दिया था । पू. महाराजश्री ने श्री हनुमानजी की गदा का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी थी ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । अंत मे ठाकुरजी येअन्नकूट दर्शन का लाभ मिला था । यहाँ

प्रेसीडेन्ट श्री दक्षेशभाई पटेल तथा सेक्रेटरी श्री राजुभाई के मार्गदर्शन में युवक मंडल की बहनोने भोजनालय में अन्नकूट की सामग्री तैयार करने में प्रेरणारुप थी । तीसरे पाटोत्व को सभी अपने जीवन में उतारकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।

(कमिटी आटलान्टा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया गुरुपूर्णिमा उत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से आषाढ शुक्ल-१५ शनिवार को सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक गुरुपूर्णिमा उत्सव महंत शा. धर्मकिशोरदाजी तथा शा. नरनारायणदासजी की प्रेरणा से हरिभक्तों ने धूमधाम से मनाया था । सर्व प्रथम महामंत्र धून-कीर्तन-भक्ति की गयी थी । बाद में महंत स्वामीने अपने गुरु धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री श्री नरनारायणदेव गादी पीठ स्थान पर विराजमान है ऐसा कहकर उन तसवीर का पूजन अर्चन करके उनके महत्व को भक्तों के सामने प्रस्तुत किया ।(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुईवील कंटकी

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूलीधाम लुईवील कंटकी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से योगिनी एकादशी को विकेन्ड में शा. धर्मवल्लभ स्वामी तथा हरिनंदन स्वामी की प्रेरणा से संत-हरिभक्तोने श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून तथा कीर्तन किया था । बाद में ह्युस्टन मंदिर के सेवानिष्ठ श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल केनिष्ठावाले प.. श्री देवेन्द्रभाई पटेल तथा उनकी धर्मपत्नी कोकिलाबहन, उनकी बहन अनसूयाबहन तथा जयंतीभाई के आकस्मिक अक्षरवास पर उन्हे श्रद्धांजलि देने के लिये सभी ने धुन की थी । (परवीनभाई)

कुरियक या सादे कवर में पैसे नहीं भेंजे

कुरियर या सादे कवर में पैसे नहीं भेंजे अन्यथा उसके न मिलने का उत्तरदायित्व भेंजने वाले का होगा, इसकी सभी जानकारी करलें ।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

प.भ. रसिकभाई अंबालाल पटेल के अक्षरवास के निमित्त श्री नारणपुरा में श्रद्धांजलि सभा

प.भ. रसिकभाई अंबालाल पटेल (मोखासणवाला) श्री नरनारायणदेव स्कीम कमिटी बोर्ड के सदस्य के अक्षरवास के निमित ता. १३-७-१४ को सायंकाल ६-०० बजे श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में श्रद्धांजलि सभा रखी गयी थी । जिस में महंत शा. स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी, प.भ. नटुभाई पटेल, प.भ. रमेशभाई एन. पटेल, प.भ. रमेशभाई पटेल (पुलवाला) इत्यादिजनों ने उनके सद्‌गुणों का गुणगान किया था । श्री नरनारायणदेव की निष्ठा धर्मकुल की निष्ठा के विषय में उन की पत्नी कान्ताबहन, अमेरिका में रहने वाले पुत्र श्री जयेशभाई तथा श्री संजयभाई इत्यादि परिवार की सेवा की स्तुति की गयी थी । श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भी उनकी सेवा की सुवास प्रसिद्ध है । मोखासण तथा दंढाव्य प्रदेश के मोखरा के सेवा भावी हरिभक्तों के विशेष गुणों का स्मरण करके भावभीनी श्रद्धांजलि के साथ श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी थी ।पटेल घनश्यामभाई उवारसदवाला)

नारणपुरा (कडी) : प.भ. नथुभाई नानदास पटेल (उम्र ९२ वर्ष) ता. ८-६-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

माधवगढ (प्रांतिज) : प.भ. जयंतीभाई प्राणलाल पटेल ता. २०-६-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अमदावाद (घाटलोडीया) : प.भ. रजनीकांत बाबूभाई पटेल ता. २५-६-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

लाठीदड (वर्तमान में बोटाद) : पार्षद क्षी बाबू भगत श्री हनुमानजी के पुजारी के पूर्वाश्रम के बड़े भाई प.भ. नानजीभाई मथुरभाई (उम्र ६५ वर्ष) ता. २-७-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

गोधावी : प.भ. शांतुभा गोविंदसिंह वाघेला ता. २-७-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

समौ : प.भ. रमीलाबहन रोहितकुमार दरजी ता. २-७-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

रवानपुर : प.भ. वसंतलाल मणिलाल पटेल ता. ६-७-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

वांकानेर : प.भ. पाटडीया वसंतभाई विठ्ठलदास की माताजी मंजुलाबहन (उम्र ८३ वर्ष) ता. १३-७-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

प.पू. लालजी महाराजश्री का १७ वाँ जन्मोत्सव

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में अहमदाबाद देश के कोठारीश्री एवं प्रतिनिधियों की सभा ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

श्री नरनारायणदेव गादी के पीठाधिश्वर और लाखो आश्रितो के धर्मगुरु की सादगी और विनम्रता के दर्शन - बायरन मंदिर में अपने सन्तवृन्द के साथ जमीन पर बैठकर ठाकुरजी का प्रसाद ग्रहण करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।

Prafull Kharsani